आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-09-14

अपनी मीठी-मीठी याद से हम सजनिओं को श्रृंगार कर सतयुग के लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनाने वाले साजन-बाप ने कहा - मीठे बच्चों, तुम अपना श्रृंगार करो. टाइम वेस्ट मत करो. तुम्हारे पास टाइम बहुत थोड़ा है. तुम्हारा यह टाइम बहुत-बहुत वैल्युएबल है.
भक्तिमार्ग में जिसको पाने के लिए आज भी मनुष्यों कितना माथा मारते है, कितना जप-तप-यज्ञ करते है फिर भी उन्हें नहीं पा सकते और हम भाग्यशाली बच्चों को स्वयं भगवान आकर के हमें पढ़ाते है. क्या पढ़ाते है? मनुष्य से देवता बनने की पढाई पढ़ाते है. बाप कहते है - मेरे बच्चे जो लास्ट ६३ जन्मो से देह-अभिमानी बन बिलकुल काले बन पडे है उन्हें वापस देही-अभिमानी बनने की शिक्षा देकर, याद की यात्रा सिखलाकर, वापस आप समान गोरा बनाता हूँ.
कितना महान भाग्य है हम बच्चों का जो स्वयं भगवान हमें हर-रोज नई-नई युक्तियां बताकर हमारी आत्मा को वापस पावन बनाने के लिए मेहनत कर रहे है! शुक्रिया बाबा आपका लाख-लाख शुक्रिया.
आज बाबा हम बच्चों के साजन के रुप में मिलने आये है और हम सजनियों का श्रृंगार कर रहें हैं. मीठे-साजन ने हम सजनियों के लिए जो मीठे-महावाक्य उच्चारण किये उसे एक बार फिरसे आत्म-अभिमानी होकर पढ़े तो हम आत्माओं का सच में श्रृंगार करने का अनुभव होगा.
- रुहानी जादूगर बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं - तुम यहॉ क्या कर रहे हो? बाप अथवा साजन, सजनियों को युक्ति बता रहे हैं. साजन कहते हैं - यहॉ बैठ तुम क्या करते हो? अपने को तुम ऐसे लक्ष्मी-नारायण मिसल बनने का श्रृंगार कर रहे हो.

- बाप कहते है तुम्हारी एम ऑबजेक्ट ही लक्ष्मी-नारायण मिसल बनने का हैं भविष्य अमरपुरी के लिए. यहॉ बैठ तुम क्या कर रहे हो? पैरेडाइज के श्रृंगार के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो. यहॉ बैठे हुए अपने को चेंज कर रहे हो.

- बाप ने तुम्हें मनमनाभव की एक चाबी दे दी है तो उठते, बैठते, चलते तुम अपने ही श्रृंगार में लगे रहो.

- बाबा ने बहुत छोटी युक्ति बताई है, बस एक ही अक्षर है - मनमनाभव. तुम यहॉ बैठे हो परन्तु तुम्हारी बुद्धि में है कि कैसे सारी सृष्टि का चक्र फिरता है. अभी फिरसे हम विश्व का श्रृंगार कर रहे हैं. हम कितने पदमापदम भाग्यशाली है.

- बाबा कहते है, मनमनाभव का मन्त्र कितना ऊंच है. इस योग से ही तुम्हारे पाप भस्म होते जायेंगे और तुम साफ बनते-बनते फिर कितने शोभनिक हो जायेंगे. तुम्हारी आत्मा और काया कंचन बन जायेगी. यह कमाल है ना. तो ऐसा अपना श्रृंगार करना है.

- बाप तुम्हें युक्ति बताते हैं कि ऐसा-ऐसा करने से तुम्हारा श्रृंगार बन जायेगा. बस एक ही अक्षर से, बाप की याद से तुम्हारा श्रृंगार होता है. बाबा तुम बच्चों को कितना अच्छी रीति समझाकर फ्रेश करते हैं.

- बाप आते ही हैं ऐसा श्रृंगार बनाने. कमाल शिवबाबा आपकी, आप हमारा कितना सुंदर श्रृंगार करते हो. उठते, बैठते, चलते हमको अपना श्रृंगार करना है. बाबा कहते है अब तुम्हें फिर दूसरों का भी श्रृंगार करना है.

- बाप कहते हैं - मीठे बच्चों, तुम अपना श्रृंगार करो. टाइम वेस्ट मत करो. तुम्हारे पास टाइम बहुत थोड़ा है. तुम्हारा टाइम तो बहुत वैल्युबुल है.

- बाप तो तुम बच्चों को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं. यह हैं ही ऊंच श्रृंगार वाले, तब तो उन्हों के ही चित्र हैं जिनको बहुत पूजते रहते हैं.

- बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चों, तुमने अपने बाप को भुलने से कितना श्रृंगार बिगाड़ दिया है. बाप तो कहते है चलते-फिरते श्रृंगार करते रहो.

- बाप कहते है, मैं सबका उद्धार करने आता हूँ. मैं आया हूँ तुमको विश्व की बादशाही देने. अब मुझे याद करो, टाइम वेस्ट मत करो. काम-काज करते भी बाप को याद करते रहो. इतनी सब ढेर आत्माये आशिक है एक परमात्मा मासूक की.

- बाप कहते है, सिर्फ एक अल्फ को याद करो तो तुम्हारा श्रृंगार हो जायेगा.  ॐ शांति.